

दक्षिण भारतीय सकिाडा प्रजातको मली नई पहचान

हाल ही में जीवों के वर्गीकरण संबंधी अनुसंधान में आमतौर पर दक्षिण भारत में पाई जाने वाली **सकिाडा** प्रजातके संबंध में एक महत्वपूर्ण खोज का खुलासा किया गया है।

- पहले इसे मलेशियाई प्रजाति पुराना टिग्रीना (Purana Tigrina) समझ लिया गया था लेकिन अब इस सकिाडा की पहचान पुराना चीवीडा नामक एक वशिष्ट प्रजातके रूप में की गई है।
- यह अध्ययन पारस्थितिक आकलन के लिये सकिाडा के वितरण के संभावित प्रभावों पर भी प्रकाश डालता है।

शोध के प्रमुख नष्कर्ष:

- पुराना चीवीडा का वितरण दक्षिण भारत में गोवा से कन्याकुमारी तक उष्णकटिबंधीय सदाबहार जंगलों में वसित है।
- यह खोज सकिाडा प्रजातके बीच उच्च स्तर की स्थानिकता का समर्थन करती है।
- विभिन्न क्षेत्रों में सकिाडा की घटती उपस्थिति मुदा की गुणवत्ता और वनस्पति में गरिब का संकेत दे सकती है।



सकिाडा:

- परिचय:
 - सकिाडा वे कीड़े हैं जो हेमप्टेरा क्रम और सुपरफैमिली सकिाडोइडिया से संबंधित हैं।
 - हेमप्टेरान कीड़े, जिन्हें वास्तविक बग भी कहा जाता है, अपने माउथपार्ट का उपयोग भोजन खाने के लिये करते हैं तथा उनके दो जोड़े पंख होते हैं।
 - उनकी आँखें बड़ी, पारदर्शी पंख और आवाज़ तेज़ होती है जो विशेष अंगों द्वारा उत्पन्न होती है जिन्हें टिम्बल (Tymbals) कहा जाता

है।

■ **आहार पैटर्न और जीवन चक्र:**

- सकिाडा ज़्यादातर शाकाहारी होते हैं और पौधों से निकलने वाले रस/तरल पदार्थ का सेवन करते हैं।
- उनका जीवन चक्र जटिल होता है, अधिकांश समय वे भूमि के अंदर ही बढ़ते हैं और जब बड़े होते हैं तब बाहर निकलते हैं परंतु यह अवधि तुलनात्मक रूप से छोटी होती है।

■ **प्राकृतिक आवास:**

- अधिकांश सकिाडा कैनोपी के आसपास रहते हैं और बड़े पेड़ों वाले प्राकृतिक जंगलों में पाए जाते हैं। अंटार्कटिक को छोड़कर ये हर महाद्वीप में पाए जाते हैं।
- भारत और बांग्लादेश सामान्यतः सकिाडा की वविधिता में दुनिया में सबसे उच्च स्थान रखते हैं, इसके बाद चीन का स्थान है।

■ **महत्त्व:**

- सकिाडा जैववविधिता के लिये महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि वे कई परभक्षियों को भोजन प्रदान करते हैं, पुष्पों के परागण में सहायता करते हैं, मृदा को उपजाऊ बनाते हैं, पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण करते हैं और पर्यावरणीय स्वास्थ्य का संकेतक के रूप में कार्य करते हैं।

■ **प्रमुख खतरा:**

- मानव विकास गतिविधियाँ उन वृक्षों की संख्या को कम कर देती हैं जिन पर सकिाडा भोजन और प्रजनन के लिये निर्भर करते हैं।
- जलवायु परिवर्तन सकिाडा के उद्विकास की अवधि और समन्वय को बाधित कर सकता है।
- कीटनाशक, शाकनाशी व कवकनाशी मृदा एवं जल को प्रदूषित करते हैं तथा सकिाडा और उनके मेज़बान पौधों के स्वास्थ्य व अस्तित्व को प्रभावित करते हैं।

[स्रोत: द द्रिष्टि](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/south-indian-cicada-species-gets-a-new-identity>

